उवसमसेडीदो ओदिण्णाणं[1] उवसमसेढिं चढमाणाणं वा उवसमसम्मत्तेण थोवाणं जीवाणमुवलंभा ।

खइयसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा ॥२३७॥

खइयसम्मत्तेण मणपज्जवणाणिमुणिवराणं बहूणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥२३८॥

सुगममेदं ।

एवं तिसु अद्धासु ॥२३९॥

सव्वत्थोवा उवसमा ॥२४०॥

खवा संखेज्जगुणा ॥२४१॥

एदाणि त्तिण्णि वि सुत्ताणि[2] सुगमाणि, बहुसो परूविदत्थत्तादो[3] ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥२४२॥

....

क्योंकि, उपशमश्रेणीसे उतरनेवाले, अथवा उपशश्रेणीपर चढनेवाले मनःपर्ययज्ञानी थोडे जीव उपशमसम्यक्त्वके साथ पाये जाते हैं ।

मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२३७॥

क्योंकि, उक्त गुणस्थानोंमें क्षायिकसम्यक्त्वके साथ बहुतसे मनःपर्ययज्ञानी मुनिवर पाये जाते हैं ।

मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है ।

इसी प्रकार मनःपर्ययज्ञानियोंमें अपूर्वकरण आदि तीन उपशामक गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व है ॥२३९॥

मनःपर्ययज्ञानियोंमें उपशामक जीव सबसे कम हैं ॥२४०॥

उपशामक जीवोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥२४१॥

ये तीनों सूत्र भी सुगम हैं, क्योंकि, इनके अर्थका बहुत वार प्ररूपण कर आये हैं ।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिन प्रवेशकी अपेक्षा दोनों ही तुल्य और तावन्मात्र ही हैं ॥२४२॥

....

१ अ-कप्रत्योः 'ओहिणाणं' आप्रतौ 'आधिणाण' इति पाठः ।

२ मु. प्रतौ तिण्णि सुत्ताणि इति पाठः । ३ मु. प्रतौ परूविदत्तादो इति पाठः ।

तुल्ला तत्तिया सद्दा हेउ-हेउमंतभावेण जोजेयव्वा । तं कधं? जेण तुल्ला, तण तत्तिया त्ति । केत्तिया ते ? अट्ठुत्तरसयमेत्ता ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा[1] ॥२४३॥

पुव्वकोडिकालम्हि संचयं गदा सजोगिकेवलिणो एगसमयपवेसगेहिंतो संखेज्जगुणा, संखेज्जगुणेण कालेण मिलिदत्तादो ।

एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥२४४॥

कुदो? चउवण्णपमाणत्तादो ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥२४५॥

सुगममेदं ।

खवा संखेज्जगुणा ॥२४६॥

तुल्य और तावन्मात्र, ये दोनों शब्द हेतु-हेतुमद्भावसे सम्बन्धित करना चाहिए ।

शंका - वह कैसे?

समाधान - चूंकि, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली परस्पर तुल्य हैं, इसलिए वे तावन्मात्र अर्थात् पूर्वोक्त प्रमाण हैं ।

शंका - वे कितने हैं ?

समाधान - वे एक सौ आठ संख्याप्रमाण हैं ।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥ २४३ ॥

पूर्वकोटीप्रमाण कालमें संचयको प्राप्त हुए सयोगिकेवली एक समयमें प्रवेश करने - वालोंकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं, क्योंकि, वे संख्यातगुणित कालसे संचित हुए हैं ।

इस प्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥ २४४ ॥

क्योंकि, उनका प्रमाण चौपन है ।

संयतोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥ २४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयतोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥ २४६ ॥

1 केवलज्ञानिषु अयोगकेवलिभ्यः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

को गुणगारो? दोण्णि रूवाणि । किं कारणं ? जेण णाण-वेदादिसव्ववियप्पेसु उवसमसेडिं चडंतजीवेहिंतो खवगसेडिं चढंतजीवा दुगुणा त्ति आइरिओवदेसादो । एगसमएण तित्थयरा छ खवगसेडिं चडंति । दस पत्तेयबुध्दा चढंति, बोहियबुध्दा अट्ठुत्तरसयमेत्ता, सग्गच्चुआ तत्तिया चेव । उक्कस्सोगाहणाए दोण्णि खवगसेडिं चडंति[1], जहण्णोगाहणाए चत्तारि, मज्झिमोगाहणाए अट्ठ । पुरिसवेदेण अट्ठुत्तरसयमेत्ता, णउंसयवेदेण दस, इत्थिवेदेण वीसं । एदेसिमध्दमेत्ता उवसमसेढिं चढंति[2] त्ति घेत्तव्वं ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ २४७ ॥

केत्तिया ? अट्ठुत्तरसयमेत्ता । कुदो ? संजमसामण्णविवक्खादो ।

....

गुणकार क्या है ? दो रूप गुणकार है ।

शंका -क्षपकोंका गुणकार दो होनेका कारण क्या है?

समाधान - चूंकि, ज्ञान, वेद आदि सर्व विकल्पोंमें उपशमश्रेणीपर चढनेवाले जीवोंसे क्षपकश्रेणीपर चढनेवाले जीव दुगुणे होते हैं, इस प्रकार आचार्योंका उपदेश पाया जाता है ।

एक समयमें एक साथ छह तीर्थंकर क्षपकश्रेणीपर चढते हैं । दश प्रत्येकबुध्द, एक सौ आठ बोधितबुध्द और स्वर्गसे च्युत होकर आये हुए उतने ही जीव अर्थात् एक सौ आठ जीव क्षपकश्रेणीपर चढते हैं । उत्कृष्ट अवगाहनावाले दो जीव क्षपकश्रेणीपर चढते हैं । जघन्य अवगाहनावाले चार और ठीक मध्यम अवगाहनावाले आठ जीव एक साथ क्षपकश्रेणीपर चढते हैं । पुरुषवेदके उदयके साथ एक सौ आठ, नपुंसकवेदके उदयसे दश और स्त्रीवेदके उदयसे बीस जीव क्षपकश्रेणीपर चढते हैं । इन पूर्वोक्त जीवोंके आधे प्रमाण जीव उपशमश्रेणीपर चढते हैं, ऐसा अर्थ, ग्रहण करना चाहिए ।

संयतोंमें क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२४७॥

शंका - क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ कितने होते हैं?

समाधान - एक सौ आठ होते हैं, क्योंकि, यहांपर संयम-सामान्यकी विवक्षा की गई है ।

....

[1] दो चेवुक्कोसाए चउर जहण्णाए मज्झिमाए उ । अट्ठहियं सयं खलु सिज्झइ ओगाहणाइ तहा ॥ प्रवच द्वा. ५०,४७५.

[2] होंति खवा इगिसमये बोहियबुद्धा य पुरिसवेदा य । उक्कस्सेणट्ठुत्तरसयप्पमा सग्गदो य चुदा ॥ पत्तेयबुद्धतित्थयरत्थिणउंसयमणोहिणाणजुदा । दसछक्कवीसदसवीसट्ठावीसं जहाकमसो ॥ जेट्ठावरबहुमज्झिम ओगाहणगा दु चारि अट्ठेव । जुगवं हवंति खवगा उवसमगा अद्धमेदेसिं ॥ गो.जी. ६२९-६३१.

सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥२४८॥

सुबोज्झमेदं ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥२४९॥

कुदो? एगसमयादो संचयकालसमूहस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभा ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥२५०॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया । एत्थ ओघकारणं चिंतिय वत्तव्वं ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥२५१॥

को गुणगारो । दोण्णि रूवाणि ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥२५२॥

कुदो? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥२५३॥

....

संयतोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिन ये दोनों ही प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२४८॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयतोंमें सयोगिकेवली संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥२४९॥

क्योंकि, एक समयकी अपेक्षा संचयकालका समूह संख्यातगुणा पाया जाता है ।

संयतोंमें सयोगिकेवली जिनोंसे अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥२५०॥

गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है । यहांपर राशिके ओघके समान होनेका कारण चिन्तवन कर कहना चाहिए । इसका कारण यह है कि दोनों स्थानोंपर संयम-सामान्य ही विवक्षित है (देखो सूत्र नं. ८) ।

संयतोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥२५१॥

गुणकार क्या है? दो रूप गुणकार है ।

संयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥२५२॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

संयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२५३॥

कुदो? पुव्वकोडिसंचयादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥२५४॥

खओवसमियसम्मत्तादो ।

एवं तिसु अद्धासु ॥२५५॥

सव्वत्थोवा उवसमा ॥२५६॥

खवा संखेज्जगुणा ॥२५७॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु दोसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा[1] ॥२५८॥

खवा संखेज्जगुणा[2] ॥२५९॥

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा[3] ॥२६०॥

....

क्योंकि, उनका संचयकाल पूर्वकोटी वर्ष है ।

संयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२५४॥

क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टियोंके क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होता है (जिसकी प्राप्ति सुलभ है) ।

उसी प्रकार संयतोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व है ॥२५५॥

उक्त गुणस्थानोंमें उपशामक जीव सबसे कम हैं ॥२५६॥

उपशामकोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥२५७॥

ये तीनों ही सूत्र सुगम हैं ।

सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंमें अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, इन दोनों गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥२५८॥

उपशामकोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥२५९॥

क्षपकोंसे अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत संख्यातगुणित हैं ॥२६०॥

....

१ संयमानुवादेन सामायिकच्छेदोपस्थापनशुद्धिसंयतेषु द्वयोरुपशमकयोस्तुल्यसंख्या । स.सि. १,८.

२ ततः संख्येयगुणौ क्षपकौ । स.सि. १,८.

३ अप्रमत्ताः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८.

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा[१] ॥२६१॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥२६२॥

कुदो? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥२६३॥

पुव्वकोडिसंचयादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥२६४॥

खओवसमियसम्मत्तादो ।

एवं दोसु अद्धासु ॥२६५॥

सव्वत्थोवा उवसमा ॥२६६॥

खवा संखेज्जगुणा ॥२६७॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत संख्यातगुणित हैं ॥२६१॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥२६२॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुण-स्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२६३॥

क्योंकि, उनका संचयकाल पूर्वकोटी वर्ष है ।

सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२६४॥

क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टियोंके क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होता है (जिसकी प्राप्ति सुलभ है) ।

इसी प्रकार उक्त जीवोंका अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, इन दोनों गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व है ॥२६५॥

उक्त जीवोंमें उपशामक सबसे कम हैं ॥२६६॥

उपशामकोंसे क्षपक संख्यातगुणित हैं ॥२६७॥

ये तीनों ही सूत्र संख्यातगुणित हैं ।

[१] प्रमत्ताः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८.

परिहारसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा[1] ॥२६८॥

सुगममेदं ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा[2] ॥२६९॥

को गुणगारो? दो रूवाणि ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥२७०॥

कुदो? खइयसम्मत्तस्स पउरं संभवाभावा ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥२७१॥

कुदो? खओवसमियसम्मत्तस्स पउरं संभवादो । एत्थ उवसमसम्मत्तं णत्थि, तीसं वासेहि[2] विणा परिहारसुद्धिसंजमस्स संभवाभावा । ण च तेत्तियकालमुवसमसम्मत्तस्सावट्ठाणमत्थि, जेण परिहारसुद्धिसंजमेण उवसमसम्मत्तस्सुवलद्धी होज्ज? ण च परिहारसुद्धिसंजममछंडत्तस्स[3] उवसमसेडीचडणट्ठं दंसणमोहणीयस्सुवसामणं[4] पि संभवइ, जेणुवसमसेढिम्हि दोण्हं पि संजोगो होज्ज ।

....

परिहारशुद्धिसंयतोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे कम हैं ॥२६८॥

यह सूत्र सुगम है ।

परिहारशुद्धिसंयतोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत संख्यातगुणित हैं ॥२६९॥

गुणकार क्या है? दो रूप गुणकार है ।

परिहारशुध्दिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥२७०॥

क्योंकि, क्षायिकसम्यक्त्वका प्रचुरतासे होना संभव नहीं है ।

परिहारशुध्दिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२७१॥

क्योंकि, क्षायोपशमिकसम्यक्त्वका प्रचुरतासे होना संभव है । यहां परिहारशुद्धिसंयतोंमें उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, क्योंकि, तीस वर्षके विना परिहारशुद्धिसंयमका होना संभव नहीं है । और न उतने काल तक उपशमसम्यक्त्वका अवस्थान रहता है, जिससे कि परिहारशुद्धिसंयमके साथ उपशमसम्यक्त्वकी उपलब्धि हो सके? दूसरी बात यह है कि परिहारशुद्धिसंयमको नहीं छोडनेवाले जीवके उपशमश्रेणीपर चढनेके लिए दर्शनमोहनीयकर्मका उपशमन होना भी संभव नहीं है, जिससे कि उपशमश्रेणीमें उपशमसम्यक्त्व और परिहारशुध्दिसंयम, इन दोनोंका भी संयोग हो सके ।

....

[1] परिहारविशुद्धिसंयतेषु अप्रमत्तेभ्यः प्रमत्ताः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८. [2] मु. प्रतौ वासेण इति पाठः । [3] मु. प्रतौ संजमछद्दंत्तस्स इति पाठः । [4] मु. ता. १ प्रत्योः सामण्णं इति पाठः ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयउवसमा थोवा[1] ॥२७२॥

चउवण्णपमाणत्तादो[2] ।

खवा संखेज्जगुणा ॥२७३॥

को गुणगारो? दोण्णि रूवाणि ।

जधाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु अकसाइभंगो[3] ॥२७४॥

जधा अकसाईणमप्पाबहुगं उत्तं तधा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं पि कादव्वमिदि उत्तं होदि ।

संजदासंजदेसु अप्पाबहुअं णत्थि[4] ॥२७५॥

एयपदत्तादो । एत्थ सम्मत्तप्पाबहुअं उच्चदे । तं जहा-

संजदासंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥२७६॥

कुदो? संखेज्जपमाणत्तादो ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसाम्परायिक उपशामक जीव अल्प हैं ॥२७२॥

क्योंकि, उनका प्रमाण चौपन है ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें उपशामकोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥२७३॥

गुणकार क्या है? दो रूप गुणकार है ।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंमें अल्पबहुत्व अकषायी जीवोंके समान है ॥२७४॥

जिस प्रकार अकषायी जीवोंका अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंका भी अल्पबहुत्व करना चाहिए, यह अर्थ कहा गया है ।

संयतासंयत जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥२७५॥

क्योंकि, संयतासंयत जीवोंके एक ही गुणस्थान होता है । यहांपर सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व कहते हैं । वह इस प्रकार है-

संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥२७६॥

क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात ही है ।

---

[1] सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयतेषु उपशमकेभ्यः क्षपकाः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८. [2] मु. प्रतौ कुदो? चउवण्ण-इति पाठः । [3] यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतेषु उपशान्तकषायेभ्यः क्षीणकषायाः संख्येयगुणाः । अयोगिकेवलिनस्तावन्त एव । सयोगिकेवलिनः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८. [4] संयतासंयतानां नास्त्यल्पबहुत्वम् । स.सि.१,८.

उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२७७॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२७८॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

असंजदेसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी[1] ॥२७९॥

कुदो? छावलियसंचयादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा[2] ॥२८०॥

कुदो? संखेज्जावलियसंचयादो ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा[3] ॥२८१॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? साभावियादो ।

....

संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२७७॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

संयतासंयत गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणित हैं ॥२७८॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसका कारण जानकर कहना चाहिए । (देखो सूत्र नं. २०) ।

असंयतोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥२७९॥

क्योंकि, उनका संचयकाल छह आवलीमात्र है ।

असंयतोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२८०॥

क्योंकि, उनका संचयकाल संख्यात आवलीप्रमाण है ।

असंयतोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२८१॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

....

१ असंयतेषु सर्वतः सासादनसम्यग्दृष्टयः । स.सि. १,८.

२ सम्यग्मिथ्यादृष्टयः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८.

३ असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणाः । स.सि. १,८.

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा[1] ॥२८२॥

को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि । कुदो? साभावियादो ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥२८३॥

कुदो? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२८४॥

कुदो? वे सागरोवम[2] संचयादो । को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? साभावियादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२८५॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? साभावियादो ।

एवं संजममग्गणा समत्ता ।

असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥२८२॥

गुणकार क्या है? अभव्यसिध्दोंसे अनन्तगुणित और सिद्धोंसे भी अनन्तगुणित राशि गुणकार है, जो सर्व जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥२८२॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२८४॥

क्योंकि, उनका संचयकाल दो सागरोपम है । गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२८५॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

इस प्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

---

[1] मिथ्यादृष्टयोऽनन्तगुणाः स.सि. १,८.

[2] मु. प्रतौ कुदो? सागरोवम-इति पाठः ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं[1] ॥ २८६ ॥

जधा ओघम्हि एदेसिमप्पाबहुगं परूविदं तधा एत्थ वि परूवेदव्वं, विसेसाभावा । विसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि -

णवरि चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २८७ ॥

को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । कुदो ? साभावियादो ।

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो[2] ॥ २८८ ॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो[3] ॥ २८९ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

....

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥ २८६ ॥

जिस प्रकार ओघमें इन गुणस्थानवर्ती जीवोंका अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहांपर भी कहना चाहिए; क्योंकि, दोनोंमें कोई विशेषता नहीं है । अब चक्षुदर्शनी जीवोंमें सम्भव विशेषताके प्ररूपण करनेके लिए उत्तर सूत्र कहते हैं -

विशेषता यह है कि चक्षुदर्शनी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि असंख्यातगुणित हैं ॥ २८७ ॥

गुणकार क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण है । जगश्रेणियां भी जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र हैं । इसका कारण क्या है? ऐसा स्वभावसे है ।

अवधिदर्शनी जीवोंका अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ २८८ ॥

केवलदर्शनी जीवोंका अल्पबहुत्व केवलज्ञानियोंके समान है ॥ २८९ ॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

इस प्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई ।

....

१ दर्शनानुवादेन चक्षुर्दर्शनिनां मनोयोगिवत्।अचक्षुर्दर्शनिनां काययोगिवत्।स.सि.१, ८.

२ अवधिदर्शनिनामवधिज्ञानिवत् । स. सि. १, ८.

३ केवलदर्शनिनां केवलज्ञानिवत् । स. सि. १,८.

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी[1] ॥ २९० ॥

सुगममेदं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २९१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? साभावियादो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ २९३ ॥

को गुणगारो ? अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो, सिध्देहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ २९४ ॥

....

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि सबसे कम हैं ॥ २९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥ २९१ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ २९२ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥ २९३ ॥

गुणकार क्या है ? अभव्यसिध्दोंसे अनन्तगुणित और सिध्दोंसे भी अनन्तगुणित राशि गुणकार है, जो सर्व जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि सबसे कम हैं ॥ २९४ ॥

....

[1] लेश्यानुवादेन कृष्णनील-कापोतलेश्यानां असंयतवत् । स. सि. १, ८.

कुदो ? मणुसकिण्ह-णीललेस्सियसंखेज्जखइयसम्मादिट्ठिपरिग्गहादो ।

उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो? णेरइएसु किण्हणीललेस्सिएसु[1] पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तउवसमसम्मादिट्ठीणमुवलंभा ।

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तउवसमसम्मादिट्ठीणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

णवरि विसेसो, काउलेस्सिएसु असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ २९७ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९८ ॥

कुदो ? पढमपुढविम्हि[2] संचिदखइयसम्मादिट्ठिग्गहणादो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

....

क्योंकि, यहां पर कृष्ण और नीललेश्यावाले संख्यात क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका ग्रहण किया गया है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असयंतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ २९५ ॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, कृष्ण और नील लेश्यावाले नारकियोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका सद्भाव पाया जाता है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ २९६ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

केवल विशेषता यह है कि कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥ २९७ ॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अन्तमुहूर्त है ।

कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ २९८ ॥

क्योंकि, यहां पर प्रथम पृथिवीमें संचित क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंका ग्रहण किया गया है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

....

[1] मु. प्रतौ किण्हलेस्सिएसु इति पाठः । [2] मु. प्रतौ - विहिं इति पाठः ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा[1] ॥३००॥

कुदो ? संखेज्जपरिमाणत्तादो ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा[2] ॥ ३०१ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा[3] ॥ ३०२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३०३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? सोहम्मीसाण-सणक्कुमारमाहिंदरासिपरिग्गहादो ।

कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ २९९ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे कम हैं ॥ ३०० ॥

क्योंकि, उनका परिमाण संख्यात है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३०१ ॥

गुणकार क्या है ? दो रूप गुणकार है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३०२॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंखयातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंखयात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें संयतासंयतोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३०३ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यहां पर सौधर्म-ईशान और सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्पसम्बन्धी देवराशिको ग्रहण किया गया है ।

---

[1] तेजःपद्मलेश्यानां सर्वतःस्तोका अप्रमत्ताः । स. सि. १, ८. [2] प्रमत्ताः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

[3] एवमितरेषां पंचेन्द्रियवत् । स. सि. १, ८.

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३०४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३०५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुबोज्झं ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३०६ ॥

को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥ ३०७ ॥

जधा ओघम्हि अप्पाबहुअमेदेसिं उत्तं सम्मत्तं पडि, तधा एत्थ सम्मत्तप्पाबहुगं वत्तव्वमिदि वुत्तं होइ ।

....

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३०४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३०५ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३०६ ॥

गुणकार क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है, जो असंख्यात प्रतरांगुलप्रमाण है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥ ३०७ ॥

जिस प्रकार ओघमें इन गुणस्थानोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहांपर सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व कहना चाहिए, यह अर्थ कहा गया है ।

सुक्कलेस्सिएसु तिसु अध्दासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा[1] ॥ ३०८ ॥

सुगममेदं ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३०९ ॥

कुदो ? चउवण्णपमाणत्तादो[2] ।

खवा संखेज्जगुणा[3] ॥ ३१० ॥

अट्ठुत्तरसदपरिमाणत्तादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३११ ॥

सुगममेदं ।

सजोगिकेवली पवेसणेण तत्तिया चेव ॥ ३१२ ॥

एदं पि सुगमं ।

सजोगिकेवली अध्दं पडुच्च संखेज्जगुणा[4] ॥ ३१३ ॥

शुक्ललेश्यावालोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥ ३०८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥ ३०९ ॥

क्योंकि, उनका प्रमाण चौपन है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३१०॥

क्योंकि, उनका परिमाण एक सौ आठ है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें क्षीणकषायवीतराछद्मस्थ जीव पूवोक्त प्रमाण ही हैं ॥ ३११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सयोगिकेवली प्रवेशकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३१२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सयोगिकेवली संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥ ३१३ ॥

---

१ शुक्ललेश्यानां सर्वतः स्तोका उपशमकाः । स. सि. १, ८.

२ ता. १ प्रतौ चउवण्णप्पसंगादो इति पाठः । ३ क्षपकाः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

४ सयोगकेवलिनः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

को गुणगारो ? ओघसिध्दो ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा[1] ॥ ३१४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा[2] ॥ ३१५ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा[3] ॥ ३१६ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढम-वग्गमूलाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा[4] ॥ ३१७ ॥

को गुणगारो ? अवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा[5] ॥ ३१८ ॥

गुणकार क्या है ? ओघमें बतलाया गया गुणकार ही यहांपर गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सयोगिकेवली जिनोंसे अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३१४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३१५॥

गुणकार क्या है ? दो रूप गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३१६ ॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें संयतासंयतोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३१७ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यात गुणित हैं ॥ ३१८ ॥

१ अप्रमत्तसंयताः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८. २ प्रमत्तसंयताः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

३ संयतासंयताः (अ-) संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

४ सासादनसम्यग्दृष्टयः (अ-) संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

५ सम्यग्मिथ्यादृष्टयः संख्येयगुणाः । स. सि. १, ८.

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा[1] ॥ ३१९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा[2] ॥ ३२० ॥

आरणच्चुदरासिस्स पहाणत्तपरियप्पणादो ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ३२१ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३२२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३२३ ॥

खओवसमियसम्मत्तादो ।

....

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३१९ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥३२० ॥

क्योंकि, यहांपर आरण-अच्युतकल्पसम्बन्धी देवराशिकी प्रधानता विवक्षित है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥ ३२१ ॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अन्तमुहुर्त है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥ ३२२ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि संख्यातगुणित हैं ॥ ३२३ ॥

क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टियोंके क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होता है (जिसकी प्राप्ति सुलभ है) ।

....

[1] मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयगुणाः । स. सि. १,८. [2] असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणाः (?) । स. सि.१,८.

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुगमोघं ॥ ३२४ ॥

जधा एदेसिमोघम्हि सम्मत्तप्पाबहुगं वुत्तं, तहा वत्तव्वं ।

एवं तिसु अद्धासु ॥ ३२५ ॥

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ ३२६ ॥

खवा संखेज्जगुणा ॥ ३२७ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एवं लेस्सामग्गणा[1] समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठी जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं[2] ॥ ३२८ ॥

एत्थ ओघअप्पाबहुअं अणूणाहियं वत्तव्वं ।

....

शुक्ललेश्यावालोंमें संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥ ३२४ ॥

जिस प्रकार इन गुणस्थानोंका ओघमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहांपर भी कहना चाहिए ।

इसी प्रकार शुक्ललेश्यावालोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व है ॥ ३२५ ॥

उक्त गुणस्थानोंमें उपशामक जीव सबसे कम हैं ॥ ३२६ ॥

उपशामकोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥ ३२७ ॥

ये तीनों ही सूत्र सुगम हैं ।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिध्दोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक जीवोंका अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥ ३२८ ॥

यहांपर ओघसम्बन्धी अल्पबहुत्व हीनता और अधिकतासे रहित अर्थात् तत्प्रमाण ही कहना चाहिए ।

....

१ ता. २ प्रतौ ' लेस्समग्गणा ' इति पाठः ।

२ भव्यानुवादेन भव्यानां सामान्यवत् । स. सि. १, ८.

अभवसिद्धिएसु अप्पाबहुअं णत्थि[1] ॥ ३२९ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु ओधिणाणिभंगो ॥ ३३० ॥

जधा ओधिणाणीणमप्पाबहुगं परूविदं, तधा एत्थ परूवेदव्वं । णवरि सजोगिअजोगिपदाणि वि एत्थ अत्थि, सम्मत्तसामण्णे अहियारादो ।

खइयसम्मादिट्ठीसु तिसु अध्दासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा[2] ॥ ३३१ ॥

तप्पाओग्गसंखेज्जपमाणत्तादो ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव[3] ॥ ३३२ ॥

सुगममेदं ।

अभव्यसिद्धोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥ ३२९ ॥

क्योंकि, उनके एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ही होता है ।

इस प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंमें अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ ३३० ॥

जिस प्रकार ज्ञानमार्गणामें अवधिज्ञानियोंका अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहांपर भी कहना चाहिए । केवल विशेषता यह है कि सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, ये दो गुणस्थानपद यहांपर होते हैं , क्योंकि, यहांपर सम्यक्त्वसामान्यका अधिकार है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥ ३३१ ॥

क्योंकि, उनका तत्प्रायोग्य संख्यात प्रमाण है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥ ३३२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१ अभव्यानां नास्त्यल्पबहुत्वम् । स. सि. १, ८.

२ सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिषु सर्वतः स्तोकाश्चत्वार उपशमकाः । स. सि. १, ८.

३ इतरेषां प्रमत्तान्तानां सामान्यवत् । स. सि. १, ८.